ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 109-112

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

सामाजिक –सांप्रदायिक सौहार्द का वितान रचती चन्द्रकान्ता की कहानियाँ

पवन कुमार रावत

असिस्टेंट प्रोफेसर– हिंदी विभाग, कमला नेहरू भौतिक एवं सामाजिक विज्ञान संस्थान सुलतानपुर, (उ0प्र0), भारत

Received- 25.11. 2019, Revised- 28.11.2019, Accepted - 30.11.2019 E-mail: jrfpawan2012@gmail.com

सारांश : *भारतीय समाज विविधताओं से भरा हुआ समाज है। यह समाज अपने भीतर हर रंग को समेटे हुए है। इनके रंग में परिवर्तन भी समय के अनुरूप होता है। परिवर्तन समय का स्वभाव है। समय के इस स्वभाव से भारतीय समाज अछूता नहीं है। वह भी अपना रंग, ढंग और चेहरा बदलता है। दरअसल समाज निर्मित होता है समाज में रहने वाले लोगों से, उनके आचार–विचार, व्यवहार, अनुभूति और संवेदनाओं से उनकी गतिविधियों ओर क्रियाकलापों से। पर इसी समाज में कुछ ऐसे भी लोग सक्रिय हैं जो समाज को विखण्डित करने का कार्य करते हैं। सामाजिक असन्तुलन व अस्थिरता पैदा करने की कोशिश करते हैं। तो कुछ ऐसे भी हैं, जो समाज को समरस व समतामूलक रंग देने का यत्न करते हैं। कथा लेखिका चन्द्रकान्ता ने ऐसे ही खूबसूरत रंगों को समाज के भीतर से तलाशा है और उसे अपनी कलम के माध्यम से साहित्य के हृदय में जगह दी है।*

कुंजी शब्द – विविधता, परिवर्तन, अनुरूप, आचार–विचार, व्यवहार, अनुभूति, संवेदना, क्रियाकलाप, विखण्डित।

आज हम इक्कीसवीं सदी में जी रहे हैं। यह विकास प्रतिस्पर्धा व परिवर्तन की सदी है। वैज्ञानिक तकनीकी, सूचना, संचार, टी0वी0, इन्टरनेट, कम्प्यूटर, मोबाइल, रोबोट, सैटेलाइट, मीडिया, सोशल मीडिया, फैशन, एनीमेशन से सुसज्जित सुख सुविधाओं ने मानव जीवन को सरल, सहज व आरामदेह बनाया है। विकास के रास्ते पर निरन्तर चलते हुए भी हम मानसिक रूप से अत्यंत पिछड़े हैं। हमारा यही मानसिक पिछड़ापन मानवता के अस्तित्व और अस्मिता पर संकट खड़ा कर देता है। इन सब के कारण अनगिनत सामाजिक समस्याओं का जन्म होता है। जिनसे मनुष्य आहत होता है। पीड़ित व परेशान होता है। मनोवैज्ञानिक दबाव भी झेलता है। समय के इस जटिल दौर में मनुष्य मशीनी कलपुर्जा बनकर रह गया है। अर्थ के आगे जीवन के सारे मूल्य ढह गये। रिश्ते–नातों ने अपनी चमक खो दी है। आज बाजारवाद की दृष्टि से हर चीज को देखने–परखने का मापदण्ड बन गया है। दीन–धर्म के नाम पर तोड़ने व बॉटने की साजिश की जा रही है। राजनीति अपे रास्ते से भटक गयी है तब ऐसी विपरीत स्थिति में रचनाकार इसी समाज के भीतर से कुछ ऐसे सार्थक व प्रभावी पहलुओं को खोजकर सामने ले आता है जो मानवता के हितों से जुड़ा हुआ होता है। कथा लेखिका चन्द्रकान्ता की कहानियाँ आतंक, हिंसा, नफरत के बीच से भी सांप्रदायिक–सामाजिक सौहार्द की खुशबू व मिठास को अपने अनुभव बोध, ज्ञान, संवेदना के द्वारा साहित्य के फलक में समेट लेती हैं। उन्हें तलाश कर लेती हैं। प्रस्तुत आलेख में इसी खुशबू और मिठास को उनकी कहानियों में उद्घाटित किया जायेगा। चन्द्रकान्ता हिन्दी जगत् में एक ऐसी उम्दा शख्सियत हैं जो किसी परिचय की मोहताज नहीं हैं। इनके साहित्य का कैनवास विस्तृत है। वह विविध रंगी है। इन्होंने कुल चौदह कहानी संग्रह, सात उपन्यास, एक काव्य संग्रह एवं एक आत्मकथात्मक संस्मरण लिखकर हिन्दी साहित्य की भूमि को उर्वर व समृद्ध करने का कार्य किया है। व्यास सम्मान से पुरस्कृत कथा लेखिका चन्द्रकान्ता ने समाज के हर उस कोने में झाँकने का प्रयास किया है जो मानवता के दुःखों से आर्द्र है। कश्मीर इनकी जन्म भूमि है। जन्म भूमि के प्रति आत्मीयता व राग का होना स्वाभाविक है। वह कहती भी हैं – ''कश्मीर मेरी जन्मभूमि, अनुभवों, संवेदनाओं, सुख–दुःख की धरती है।''1. इनके साहित्य में विषयंगत और विधागत भिन्नता है। इनका विचार है – ''मैने कहानी, कविता, उपन्यास, संस्मरण आदि विधाओं के माध्यम से समाज में व्याप्त विसंगतियों को दिखाया हैं।2'' इनके लेखन के विषय में प्रकाश मनु कहते हैं– ''चन्द्रकान्ता उन लेखिकाओं से हैं जिन्होंने कभी ढर्रे वाली कहानियाँ नहीं लिखी।''3. यही इनके साहित्य का वैशिष्ट्य है। लेखिका चन्द्रकान्ता का कहना है –'' लेखक के लिए लेखन एक जीवन शैली है। रचना कर्म स्वयं और समाज के प्रति एक दायित्व है।''4. समाज को समतल बनाने का दायित्त्व सबसे अधिक रचनाकार पर ही है।

'पोशनूल की वापसी, कहानी आपसी प्यार व भाईचारे की एक संवेदनात्मक कहानी है।

कहानी में बबलाल बारामूला के हाई स्कूल में हेड मास्टर थे। इसी स्कूल में महदा एक चपरासी था। दोनों परिवारों के बीच एक भावनात्मक व निश्छल रिश्ता था। अपने गाँव घर से दूर होने के कारण महदा बनलाल के परिवार के साथ ही रहता था। महदा, बवलाल के तीनों बच्चो कमली, दुर्गी निका को अपने बच्चों की तरह प्यार

अनुरूपी लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

करता था। बबलाल थी महदा को अपने परिवार का हिस्सा मानते हैं। वह समय, समय पर महदा के खाने–पीने का ख्याल भी रखते हैं। बबलाल को कभी–कभी लगता कि काकनी माँ उसके खाने–पीने का ठीक ढ़ंग से ध्यान नही रखती तो वह महदे से कहती कि वह बनलाल के साथ ही बैठकर भोजन करा करे। पर महदा काकनी माँ से कहता है– ''काकनी माँ! मलिक और नौकर को एक साथ बिठाकर मुझे जहंन्नुम में क्यों भेजती हो?'' महदा और बबलाल के बीच अनूठा रिश्ता था जो प्रेम, सद्भाव व विश्वास पर आधारित था। जहाँ न अमीरी–गरीबी की दीवार थी और न छोटे–बड़े का भेद था।

इतना ही नहीं कार्तिक मास की एक रात जब घाटी में मारकाट व हिंसा फैल जाती है। महिलाएँ अपनी जान और इज्जत बचाने के लिए भूसा कोठरियों में छिप जाती हैं तो उन्हें खींचकर उनका बलात्कार किया जाता है। उसी समय आतंकी बबलाल के घर पर भी धावा बोलते हैं। गाँव के रसूल मियाँ, लतीफ बेग और गफार महदे से कहते हैं– ''महदे अपने मास्टर की जान बचाना चाहता है तो मास्टरनी को बाहर भेज और उन छोकरियों को भी।''5 भीतर इन बातों को सुन रहे बबलाल पर दुःखों का पहाड़ टूट पड़ता है। वह महदा के पैरों में गिरकर अपने परिवार की इज्जत और जान बचाने की गुहार लगाते हैं। परिणामतः महदे ने वही किया जो मानवीय धर्म कहता है। उसने रातों–रात बबलाल को श्रीनगर की ओर रवाना कर दिया। काकनी माँ, कमली, दुर्गी व निका को अपने घर में रख लिया। आतंकियों से बचने के लिए और कश्मीरी पण्डित की पहचान छुपाने के लिए काकनी माँ को अपना पारंपरिक पहनावा फिरन–तिरंगा छोड़कर खदीजा (महदा की पत्नी) के कपड़े पहनने पड़े। यह सब देखकर महदा शर्मिन्दा हो गया। वह–काकनी माँ से कहता है – ''काकनी माँ, तुम्हारे लिए मैं अल्लाह पाक से ईमान और अस्मत की खैर मागूँगा। वह मुझे मेरी ज्यादतियों के लिए मुआफ करें।''6. इस घटना के बाद महदा को गफार और लतीफ के हांथो बेइज्जत होना पड़ा। उन्होंने कहा था–''ऐसी भी क्या फर्ज अदायगी ?

दुश्मनों को पता चलता तो समूचे घर–बार और मोहल्ले टोले को गोलियों से भून न देते ? आखिर जान है तो जहान है।''7 इस प्रकार महदा ने अपनी जान पर खेलकर बबलाल के परिवार को ढ़हने से बचा लिया।

उधर बबलाल ने भी अपना मानवीय दायित्त्व निभाया। महदा के बेटे तारिख की पढ़ाई–लिखाई का खर्च स्वयं उठाया। उसे वजीफा दिलवाया। आज उन्हीं के प्रयास से तारिख एक स्कूल में मास्टर बन गया। मरने से पूर्व बबलाल काश्त करने वाला खेत महदा के नाम कर गये।

महदा कभी कुछ भूला नहीं। हमेशा उसकी जेब में कमली, दुर्गी व निका के बचपन की तस्वीर रहती है। वह उन्हें देखकर अतीत की सुनहरी स्मृतियों में खो जाता है। महदा के जीवन में बहार तब आती है जब एक रोज कमली रैना की चिट्ठी आती है। वह अपने बच्चों को अपना घर और महदा काका से मिलवाने के लिए जल्दी ही घाटी आने की बात कहती है। उसने अपने बच्चों के नाम भी 'कुकिल' और 'पोशनूल' रखे हैं। बच्चे भी महदा काका को देखना चाहते हैं जिनसे उनकी माँ को बचपन में ढेर सारा प्यार मिला था। चिट्ठी पढ़कर महदा की आँखों से स्नेह का झरना फूट पड़ता है। इस प्रकार यह कहानी भय, आतंक और हिंसा के बीच सामाजिक–सांप्रदायिक सद्भाव का उजास खोज लेती है।

'नवशीन मुबारक' कहानी कश्मीर की धरती के रक्त रंजित माहौल के बीच से आपसी सौहार्द का एक अनुपम सन्देश देती है। कहानी में मास्टर महाराज भट्ट और समदजू के बीच जो रिश्ता था उस रिश्ते ने कभी अपनी चमक और विश्वास नहीं खोया। दो परिवारों के बीच रिश्ता पीढ़ियों से था। मास्टर महाराज भट्ट के पिता पण्डित जगधर भट्ट जो किसी समय घाटी के बड़े जमींदार थे। आधा गाँव जिनकी कभी जागीर हुआ करता था। उन्होंने उस समय जब घाटी में जमींदारी के कानून बने तब उन्होंने समदजू को अपनी कुछ जमीनें खेती के लिए दी थीं। समदजू ने खेती किया। परिवार को पाला–पोसा। पर जगधर भट्ट ने कभी कोई हिसाब नहीं रखा। खेती से समदजू के दिन बदल गये। कय्यूम इंजीनियर बन गया और शब्बू मेडिकल स्टोर का मालिक बन गया। मान–सम्मान और प्रतिष्ठा की जमा पूँजी समदजू ने अपनी मेहनत से हासिल कर लिया।

आतंकवाद के कारण जब घाटी के हालात खराब होने लगते हैं तब मास्टर महाराज–भट्ट के सारे नाते–रिश्तेदार घर छोड़कर पलायन करने लगते हैं। उस समय मास्टर महाराज भट्ट को समदजू ढाँढस बँधाते हैं। वादी में आगजनी, गोलीबारी, हिंसा, कर्यू, गुण्डागर्दी और धमकियों से डरे सहमे मास्टर महाराज भट्ट को देखकर समदजू कहते हैं– ''मास्टर! मेरे रहते तुम पुरखों की जमीन छोड़कर बेघर नहीं हो सकते। जब तक हम सलामत, तब तक तुम भी।''8 कय्यूम एक बेटे की तरह मास्टर महाराज भट्ट को देख–रेख करता है। राशन आदि लाने में मद्द करता है। जिन्दगी के एक मोड़ पर समदजू मास्टर महाराज भट्ट के घर का चिराग बुझने से बचा लेते हैं। दसअसल

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

पत्नी तुलसी बुखार में तप रही थी। शहर में कर्यू लगा था। कर्यू खुलने के बाद मास्टर महाराज भट्ट अपने बेटे अजय को दवा लाने के लिए डॉक्टर के पास भेजते हैं तभी गोली चलने की आवाज आती है। कुछ देर के बाद घायल अजय को कय्यूम और नसीर सहारा देकर घर ले आते हैं। समदजू भी कड़ाके की बर्फबारी में अजय को छोड़ने घर आते हैं। उस समय समदजू ने मास्टर महाराज भट्ट से कहा था–'' कोई बला थी जो टल गई। अल्लाह की मेहर है तेरे बेटे पर। लम्बी उम्र पाएगा। मैंने कहा था तुझे मास्टर ग्यारह बचे हुए घरों में एक घर तेरा जरूर होगा। तेरे बाग में एक दिन बहार जरूर आएगी।''9.

इस प्रकार आतंकवाद ने जब दीन धर्म के नाम पर समाज को तोड़ने व बाँटने की कोशिश की है तब ऐसी स्थिति में समदजू और मास्टर महाराज भट्ट की दोस्ती, प्यार, आपसी भाईचारे की मिसाल हमें उम्मीद की एक किरण जरूर सौंपती है कि अभी भी बहुत कुछ शेष है। जिन्दगी के लिए, भविष्य के लिए और मनुष्यता को बचाने के लिए।

'अब्बू ने कहा था' कहानी में मास्टर रतनलाल का आतंकी इस सन्देह में अपहरण कर लेते हैं कि उन्होंने ही सेना से मुखबिरी करके उनके सरदार को पकड़वाया है। वे मास्टर रतनलाल को कठोर शारीरिक–मानसिक यातनाएँ देते हैं। आतंकी धमकी देते हैं – ''बोलो ! कौन हैं वे जिन्होंने बी0एस0एफ0 को हमारे सरदार का पता बता दिया था ? बोलो कौन हैं वे मुखबिर जासूस ? याद करो, और हमें बताओ। जान बचानी है तो उगंल दो उनके नाम।''10. मास्टर रतनलाल अपनी बेगुनाही में कहते हैं– ''मुझे कुछ नहीं मालूम बच्चों! मै। किसी जासूस को नहीं जानता। मैं तो पढ़ने–पढ़ाने वाला मास्टर हूँ, मुझे इन खुराफातों से क्या लेना–देना।''11.

मास्टर रतनलाल और फजल रहमान के बीच प्रेम का रिश्ता रहा है। फजल रहमान, मास्टर रतनलाल के स्कूल में हेड मास्टर थे। वह खुदा का नेक बन्दा था। कश्मीर के सूफी संतो, ऋषियों और विचारकों के बताये हुए रास्ते पर चलने वाला व्यक्ति था। उसने जेहाद के नाम पर मासूम लोगों का खून बहाने वालों का कड़ा विरोध किया। वह लोगों को शिक्षा देता रहा– '' हमारा दीन बेकसूरों को मारने की इजाजत नहीं देता। क्यों मारामारी करें अपने ही भाई–बन्धुओं को हलाक करते हो ?''12. जेहादियों को फजल रहमान की बात पसन्द नहीं आयी और उन्होंने उसे मौत की नींद सुला दिया। लेकिन फजल रहमान की सीख बेकार नहीं गयी। फजल रहमान की बेटी शाहीन ही थी जिसने पिता के उसूलों और बताये हुए रास्ते पर चलकर आतंकियों के चंगुल से अपने पिता के दोस्त मास्टर रतनलाल को रिहा करा लेती है। जिन आतंकियों को पकड़ने के लिए बड़े बड़ों के पसीने छूट जाते हैं। सेना को बड़ा ऑपरेशन करना पड़ता है वहाँ एक लड़की की अदम्य बहादुरी देखने को मिलती है। शाहीन पिछले तीन दिनों से मास्टर रतनलाल की जासूसी कर रही थी। उसे मालूम हो चला था कि तीन दिन बाद मास्टर रतनलाल को मार दिया जायेगा इसलिए उसने बी0एस0एफ0 की मद्द से मास्टर रतनलाल को बचा लिया। बी0एस0एफ0 के जवान कहते हैं– '' पता नहीं कब से आपको कहाँ–कहाँ ढूँढ़ती रही है।''13. शाहीन की दिलेरी और कदम से मास्टर रतनलाल भावुक हो जाते हैं और वह कहते हैं– ''तुमने शाहीन बेटी इतना बड़ा खतरा क्यों मोल ले लिया ?14''शाहीन ने जो जवाब दिया उसे सुनकर न केवल मास्टर रतनलाल बल्कि बी0एस0एफ0 के जवानों का रोम–रोम पुलकित हो उठा। शाहीन कहती है–'' मास्टर चाचा। अब्बू ने जाते–जाते कहा था, मास्टर जी को बचाना। अब्बू की बात मैं भूल नहीं पायी।''15. सेना के जवान भी शाहीन की बातों को सुनकर प्रभावित हो गये। वे कहते हैं– ''इतना बड़ा रिस्क लिया लड़की ने, सिर्फ इसलिए कि इसके अब्बू ने कहा था। सचमुच दिलेर लड़की है। बड़े–बड़े तीसमारखाँओं के तो जेहादियों के नाम से ही पसीने छूटने लगते हैं। उनकी करतूतें।''16. इन सब के बीच जीप में बैठे मास्टर रतनलाल अतीत की उन गलियों में खो जाते हैं जहाँ मास्टर रतनलाल और फजल रहमान का बरसों पुराना याराना, पारिवारिक सम्बन्ध और रिश्तों की महक थी। सामाजिक सांप्रदायिक सद्भाव भारत की एक समृद्व सांस्कृतिक विरासत की पहचान है। इस विरासत को जीवन की जमा पूँजी के रूप में सहेजने का काम किया है फजल रहमान और मास्टर रतनलाल जैसे लोगों ने। शाहीन जैसे युवा एक उम्मीद हैं। जिनके कंधो पर एक बड़ी जिम्मेदारी है। कश्मीर में आतंकियों द्वारा दीन–धर्म, जेहाद, व आर्थिक लालच के नाम पर भटके हुए युवा वर्ग को शाहीन जैसे युवा अंधेरे में रोशनी दिखाने का काम ही नहीं करते बल्कि अपने हौंसले से इस जटिल समय की प्रतिकूल परिस्थितियों को छाँटने का काम भी करते हैं।

इस प्रकार निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि कथा लेखिका चन्द्रकान्ता एक संवेदनशील रचनाकार हैं। मानव चिन्तन उनके साहित्य के केन्द्र में स्थित है। वह उन पहलुओं पर नजर रखती व तलाशती हैं जो मनुष्य और मनुष्यता के संकट से जुड़े हुए हैं। सामाजिक–सांप्रदायिक टकराव आज की सबसे गंभीर त्रासदी है। जिसने मनुष्य के अस्तित्व व उसकी अस्मिता को मिटाने का काम किया है।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-11, No.-II, Issues-14 YEAR- Dec. -2019

लेकिन सुखद ये है, कि आज भी ऐसे लोग समाज में मौजूद हैं जिन्होंने सांस्कृतिक एकता व सद्भाव की जड़ों को सूखने नहीं दिया है। अभी भी उसमें हरापन शेष है और यह हरापन तब तक बरकरार रहेगा जब तक मनुष्य में संवेदना और उम्मीद है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. चन्द्रकान्ता, प्रश्नों के दायरे में (साक्षात्कार), अमन प्रकाशन कानपुर, उ0प्र0, प्रथम संस्करण–2015, पृष्ठ संख्या–14
2. वही, पृष्ठ संख्या–56
3. संतोष गोयल, चन्द्रकान्ता का रचना संसार, अमन प्रकाशन कानपुर, उ0प्र0, प्रथम संस्करण–2018, पृष्ठ संख्या –304
4. वही, पृष्ठ संख्या–311
5. चन्द्रकान्ता, रात में सागर (कहानी संग्रह), रेमाधव प्रकाशन दिल्ली, प्रथम संस्करण–2009, पृष्ठ संख्या–14
6. वही, पृष्ठ संख्या–14
7. वही, पृष्ठ संख्या –15
8. चन्द्रकान्ता, काली बर्फ (कहानी संग्रह), ग्रन्थ अकादमी, दिल्ली, संस्करण–2013, पृष्ठ संख्या–127
9. वही, पृष्ठ संख्या–130
10. चन्द्रकान्ता, अब्बू ने कहा था (कहानी संग्रह), भारतीय ज्ञानपीठ, नयी दिल्ली, द्वितीय संस्करण –2005, पृष्ठ संख्या –113
11. वही, पृष्ठ संख्या–113
12. वही, पृष्ठ संख्या–115
13. वही, पृष्ठ संख्या–119
14. वही, पृष्ठ संख्या–119
15. वही, पृष्ठ संख्या–119
16. वही, पृष्ठ संख्या–120

*****